पाठ 3: साना-साना हाथ जोड़ि (मधु कांकरिया)

1. लेखिका परिचय

मधु कांकरिया एक संवेदनशील लेखिका और यायावर (पर्यटक) हैं। उनकी रचनाओं में प्रकृति के सौंदर्य के साथ-साथ समाज की कठोर सच्चाइयों का भी वर्णन मिलता है। यह पाठ एक **यात्रा-वृत्तांत (Travelogue)** है।

2. विस्तृत सारांश

गंगटोक का सौंदर्य: लेखिका ने रात के समय 'गंतोक' (गंगटोक) शहर को देखा, जो झिलमिलाते तारों की रोशनी में जादू-सा लग रहा था। यह एक पहाड़ी शहर है जिसे 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' कहा जाता है। सुबह होते ही लेखिका ने एक नेपाली प्रार्थना शुरू की—"साना-साना हाथ जोड़ि" (मैं छोटे-छोटे हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हूँ कि मेरा जीवन अच्छाइयों को समर्पित हो)।

पहाड़ों और तीस्ता नदी का सफर: गंगटोक से यूमथांग की यात्रा के दौरान लेखिका को प्राकृतिक नज़ारे देखने को मिले। रास्ते में सफ़ेद और रंगीन बौद्ध पताकाएँ (झंडियाँ) दिखीं। सफ़ेद झंडियाँ शांति के लिए (मृत्यु पर) और रंगीन झंडियाँ नए काम की शुरुआत पर लगाई जाती हैं। तीस्ता नदी का पानी अत्यंत निर्मल और सुंदर था।

सौंदर्य के बीच कठोर मेहनत: हिमालय की सुंदरता के बीच लेखिका ने कुछ पहाड़ी औरतों को देखा, जो अपनी पीठ पर बच्चों को बाँधकर भारी पत्थरों को तोड़ रही थीं और सड़क बना रही थीं। इसे देखकर लेखिका को एहसास हुआ कि इस 'स्वर्गीय सौंदर्य के बीच भूख, मौत और जीवित रहने की जंग' जारी है।

कटाओ (भारत का स्विट्ज़रलैंड): बर्फ़ देखने की इच्छा से वे लोग 'कटाओ' गए। वहाँ ताज़ी बर्फ़ गिरी हुई थी। वह स्थान इतना सुंदर था कि लेखिका की आत्मा तृप्त हो गई। वहाँ कोई दुकान या बाज़ार नहीं था, इसलिए वह अपनी प्राकृतिक अवस्था में सुरक्षित था। अंत में लेखिका को एहसास होता है कि प्रकृति का अपना एक चक्र है (बर्फ़ पिघलती है और गर्मियों में नदियों के रूप में हमें जल देती है)।

3. पाठ का मूल भाव

इस पाठ का मूल भाव प्रकृति की **अलौकिक सुंदरता और मनुष्य के जीवन-संघर्ष** के बीच का संबंध स्थापित करना है। प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेते समय हमें उन मेहनतकश मज़दूरों, महिलाओं और सीमा पर तैनात फौजी भाइयों के प्रति कृतज्ञ (आभारी) होना चाहिए, जो अपना जीवन दाँव पर लगाकर हमारे लिए सुगम रास्ते और सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं।

Schorbit